• अमेरिका का संविधान 4 मार्च 1789 को अपनाया गया उसके बावजूद कमला हैरिस जो उपराष्ट्रपति पद का शपथ ग्रहण करने वाली हैं वो वहाँ तक पहुँचने वाली प्रथम महिला हैं।

स्त्रियों का पूर्ण विकास नहीं — स्त्रियों को पूर्ण विकास होने देने का मौका नहीं दिया जाता है। स्त्रियों को केवल परिवार के विकास के लिए ही केवल सोचने पर मजबूर किया जाता अपना विकास के लिए उन्हें थोड़ा सा भी समय नहीं दिया जाता है। इस प्रकार यदि देखा जाये तो सभी सामाजिक बन्धन, रात-रिवाज, रूढ़ियाँ इत्यादि केवल महिलाओं के लिए ही है।

सामाजिक कुप्रथाएं — समाज में अनेक कुप्रथाएं जैसे दहेज प्रथा, विधवापन, सति प्रथा, पर्दा प्रथा इत्यादि सभी महिलाओं पर आरोप लगाया जाता है।

लैंगिक श्रम-विभाजन — पुरुष जहाँ अधिकार की भाषा बोलते हैं वही महिलाएं उत्तरदायित्व की भाषा तक ही सीमित रहती हैं, उन्हें भावुक, चंचल, कमजोर एवं अपनी समस्याओं के प्रति सबके सामने रोना-रोने की अपेक्षा की जाती है, उन्हें अपनी शारीरिक ताकत या बुद्धि की बजाय रूप-रंग पर ज्यादा ध्यान देने की अपेक्षा की जाती है।

सामाजिक संरचना एवं लिंग असमानता — नारीवादी आन्दोलन जैसे-जैसे जोर पकड़ते गए, वैसे-वैसे महिलाओं की स्थिति, भूमिका और उनके साथ होने वाले व्यवहारों के बारे में जानकारियाँ सामने आती गई। तमिलनाडु के मदुरै में कालार जाति — — —

राष्ट्रीय पोषण निगरानी ब्यूरो ने एक सर्वेक्षण के अनुसार लड़के और लड़कियों को दिये जाने वाले पौष्टिक भोजन में भी अंतर पाया गया। बालिकाओं की शिक्षा के बारे में माता-पिता यह सोचते हैं कि लड़की को शिक्षित कर आर्थिक रूप से मुझे क्या फायदा होगा। जो लड़कियां अपने आत्मविश्वास से शिक्षित होने में सफल हो जाती हैं तो अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को पुरुषों के अधीन और नियंत्रण में रहना चाहिए। —

संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार घोषणा — वर्ष 1948 में महिला-पुरुष के समान अधिकारों की पुनः अभिव्यक्ति की गई थी लेकिन फिर भी उस तरह के प्रगति नहीं दिखाई दी। 1975 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा ही तृतीय विकास दशक को

दशक घोषित किया गया है

भारत में महिला विकास के प्रयास – भारत में महिलाओं की स्थिति को अच्छा बनाने में स्वयं सेवी संगठनों द्वारा भी प्रयास किये गए हैं उनको सुविधानुसार दो भागों में बाँटा जा सकता है

स्वतंत्रता के पूर्व प्रयास – भारत में महिलाओं की गिरी हुई दशा को विभिन्न समाज सुधारको द्वारा सुधारने का प्रयास 19वीं शताब्दी से प्रारंभ होता है इस दशा में अनेक समाज सुधारकों जैसे- राजा-राममोहन राय (1774-1833) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (1820-1871), स्वामी दयानंद सरस्वती (1827-1833), केशवचन्द्र सेन (1838-1884), स्वामी विवेकानंद (1868-1902), महात्मा गाँधी (1869-1948) आदि उल्लेखनीय कार्य किये हैं.

बंगाल – 1878 में बंगाल में नारी उत्थान, टैगोर परिवार की महिला स्वर्ण कुमारी देवी, सरला देवी आदि ने आन्दोलन किया

महाराष्ट्र के पंडिता रामाबाई

20वीं सदी में – 1917 का वर्ष भारतीय नारियों की प्रगति की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है इस वर्ष श्रीमति सरोजनी नायडु के नेतृत्व में भारत सचिव मिस्टर मांटेग्यु को ज्ञापन दिया गया और महिलाओं को मताधिकार तथा स्वास्थ्य सम्बंधी सुविधाओं की मांग की गई भारतीय महिला सभा का गठन होना और श्रीमति एनिबेसेन्ट की अखिल भारतीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन का सभापति चुना जाना इसी वर्ष की महत्वपूर्ण घटनाएं हैं। इस अधिवेशन में महिलाओं के मताधिकार तथा शासन के विभिन्न पदों पर चुने जाने सम्बंधी अधिकारों की महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई।

नारी उत्थान में विदेशी महिलाओं की भूमिका – इस दिशा में तीन विदेशी महिलाओं - एनी बिसेन्ट (1847-1933), सिस्टर निवेदिता (1867-1911), मार्गरेट कॉजिंस (1878-1954) का विशेष योगदान रहा है

राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन 31 जनवरी 1992 को एक स्वायत्तशासी निकाय के रूप में राष्ट्रीय महिला आयोग 1990 के तहत किया गया, इसमे उनके अधिकारों एवं उन्नति को सुरक्षा प्रदान करने सम्बंधी कार्य सौंपे गए हैं,

1992 में 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन पंचायत व नागरपालिका के बाद 1/3 भाग सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित किये गए।

भारत में विभिन्न पर्यावरण आन्दोलनों में महिलाओं की सहभागिता –

1971 में स्थानीय लोगों द्वारा दशौली ग्राम स्वराज्य संघ के नेतृत्व में चिपको आन्दोलन की शुरुआत हुई ताकि वन्य उत्पादन पर उनके अधिकारों की रक्षा की जा सके इसमें महिलाओं ने भागीदारी की थी

इसमे यमुना देवी तथा ईश्वरी देवी जैसी महिलाओं ने स्थानीय चिपको आन्दोलन का मार्ग दर्शन दिया। बिना फुलन के 10 महीनो तक यह आन्दोलन चलाया।

अप्पिको आन्दोलन – चिपको आन्दोलन ने भारत के अन्य भागो मे भी अपना प्रभाव दिखाया पश्चिमी घाट, कर्नाटक के उत्तर कन्नड क्षेत्र मे चिपको आन्दोलन ने ग्रामवासियो को अप्पिको घाटी वाली आन्दोलन शुरु करने के लिए प्रेरणा दी। इमारती लकड़ी के लिए व्यापारिक हितो द्वारा जंगलो का विनाश किया जा रहा था। जिसके कारण मृदा अपरदन हो रहा था तथा बारह मासी जलीय स्रोत सूख रहे थे। इसके विरोध मे दक्षिण भारत के युवाओ एवं महिलाओ ने ये आन्दोलन चलाये।

चिल्का आन्दोलन – ओडिसा स्थित एशिया की सबसे बडी खारे पानी की झील है। चिल्का प्रवासी पक्षियो एवं चीत की महत्वपूर्ण प्रजातियो का निवास स्थान है। गाँव के लोग उसमे मत्स्य पालन खासकर झींगा पालने का कार्य करते थे। लेकिन बिचौलियो तथा राजनीतिज्ञों अपना प्रभाव जमाया इसी के विरुद्ध मे महिलाओ ने आन्दोलन किया 1992 मे गोपीनाथपुर गाँव मे आन्दोलन शुरु हुआ था

भोपाल गैस काण्ड – यह 3 दिसम्बर 1984 को मध्य रात्रि को हुआ था इसमे 3000 लोग मरे तथा 50,000 से अधिक फेफड़ा की बीमारी से ग्रसित हुए थे। उसमे महिलाओ ने कम्पनी की लापरवाही के विरुद्ध आवाज उठाई थी।

नर्मदा आन्दोलन (सरदार सरोवर परियोजना) भारत सरकार गुजरात 1946 मे नर्मदा नदी पर ये बाँध बनवाने का फैसला किया। 1961 मे उसकी नींव रखी गई (गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान) बाँध के कारण लोग बेघर हो गए तथा पर्यावरणीय क्षति हो रही थी इसमे मेधा पाटेकर जैसी महिलाओ का नाम लिया जा सकता है, इसमे लोग अपने घरो के लिए आन्दोलन किया था।